2 अगस्त 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 9 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

35 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 'श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट' मुम्बई द्वारा संस्थापित एवं अनेक संस्थाओं द्वारा संचालित 'श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर' द्वारा दिनांक 22 से 31 जुलाई 2012 तक 35वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री दिलीपजी बेलजी शाह मुम्बई के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी ओसवाल जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ सभी विद्वत्गण मंचासीन थे।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट का परिचय ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसंतभाई एम. दोशी मुम्बई ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सुमनभाई एवं शिविर के निर्देशक श्री अशोकजी जैन जबलपुर ने तिलक लगाकर एवं माल्यार्पणकर स्वागत किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री अभयकुमारजी सरदारशहर ने, मंच का उद्घाटन श्री सनतकुमारजी भोपाल ने एवं विधान का उद्घाटन व ध्वजारोहण श्री जिनेन्द्रजी जैन खतौलीवाले दिल्ली ने किया।

इस अवसर पर विद्वत् शिरोमणि डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने वर्तमान समय में शिविरों की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का संचालन ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने किया।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रात:काल समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रथम प्रवचन में ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा परमार्थवचनिका, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा समयसार, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयों का सामान्य स्वरूप, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। सायंकाल ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

मंगलायतन विश्वविद्यालय में -

दर्शन-विज्ञान विभाग का शुभारम्भ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 जुलाई को उस समय सारा वातावरण अत्यन्त उल्लासमय हो गया, जब मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सतीशचंद्रजी जैन ने घोषणा की कि अब मंगलायतन विश्वविद्यालय में जैनदर्शन के सुव्यवस्थित अध्ययन हेतु दर्शन विज्ञान विभाग की स्थापना कर दी गयी है। साथ ही यह भी घोषणा की गई कि **इस विभाग के प्रमुख (डीन) डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को बनाया गया है एवं डॉ. जयन्तीलालजी जैन चेन्नई इस विभाग के निदेशक होंगे।**

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. उत्तमचंदजी जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय की इस योजना की पृष्ठभूमि से उपस्थित जनसमुदाय को अवगत कराते हुए श्री देवेन्द्रजी जैन मंगलायतन ने बताया कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक स्वप्न था, जो अब साकार रूप लेने जा रहा है। इस विभाग के अन्तर्गत संचालित पाठ्यक्रम की जानकारी देते हुए डॉ. जयन्तीलालजी जैन ने बताया कि यह विभाग डिप्लोमा कोर्स, बैचलर डिग्री एवं मास्टर डिग्री कोर्स नियमित कक्षाओं तथा पत्राचार के माध्यम से सर्वप्रथम हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से प्रारम्भ करने जा रहा है, जिसे बाद में अन्य भाषाओं में भी संचालित किया जायेगा। इस हेतु समस्त सरकारी औपचारिकताएँ कर ली गई हैं और शीघ्र ही यह पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो जायेगा।

अपने उद्बोधन में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने बताया कि इस सन्दर्भ में मंगलायतन विश्वविद्यालय के चेयरमैन श्री पवनजी जैन से मेरी अनेकों बार चर्चा-वार्ता होती रही है और इसके सार्थक परिणाम अब हम सबके सामने हैं। उन्होंने विश्व समुदाय से इस पाठ्यक्रम में जुड़कर जैनदर्शन का सर्वांगीण अध्ययन करने का अनुरोध भी किया। कार्यक्रम के अन्तर्गत मंगलायतन विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति डॉ. सतीशचंद्रजी जैन, डॉ. जयन्तीलालजी जैन, डॉ. ओमप्रकाशजी जैन एवं तीर्थधाम मंगलायतन की ओर से पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन ने मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया। साथ ही डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण करके, श्रीफल भेंटकर, अंगवस्त्र पहिनाकर एवं शॉल ओढाकर मंगलायतन विश्वविद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया गया। इसी प्रकार पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से भी डॉ. सतीशचंद्रजी जैन आदि सभी महानुभावों का भव्य स्वागत किया गया।

ज्ञातव्य है कि श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ द्वारा स्मारक भवन से गत पांच वर्षों से पत्राचार पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें देश-विदेश के लगभग 1700 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इस गतिविधि से प्रेरणा पाकर श्री पवनजी जैन मंगलायतन ने इस कोर्स को मंगलायतन विश्वविद्यालय द्वारा संचालित करने के लिए विशेष प्रयत्न किये हैं।

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

81 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १४५

विगत गाथा में निर्जरा के स्वरूप का कथन किया।

अब प्रस्तुत गाथा में निर्जरा के मुख्य कारणों का कथन है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जो संवरेण जुत्तो अप्पट्ठपसाधगो हि अप्पाणं।
मुणिऊण झादि णियदं णाणं सो संधुणोदि कम्मरयं।।१४५।।

(हरिगीत)

आत्मानुभव युत आचरण से ध्यान आत्मा का धरें।
वे तत्त्वविद संवर सहित हो कर्म रज को निर्जरें।।१४५।।

संवर से युक्त जो जीव वास्तव में आत्मार्थ का अर्थात् स्व प्रयोजन का प्रकृष्ट–साधक वर्तता हुआ आत्मा को जानकर अर्थात् आत्मा का अनुभव करके ज्ञान को निश्चल रूप से ध्याता है, वह कर्मरज को खिरा देता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द सूरि टीका में कहते हैं कि संवर से अर्थात् शुभाशुभ परिणाम के परम निरोध से युक्त जो जीव वस्तुस्वरूप को अर्थात् हेय–उपादेय तत्त्व को बराबर जानते हुए पर प्रयोजन से जिसकी बुद्धि विमुख हुई है और मात्र स्व प्रयोजन साधने में जिसकी बुद्धि तत्पर हुई है तथा जो आत्मा को स्वोपलब्धि से उपलब्ध करके अर्थात् स्वानुभव द्वारा अनुभव करके गुण–गुणी का वस्तुरूप से अभेद होने के कारण अविचल परिणतिवाला होकर संचेतता है, वह जीव वास्तव में अत्यन्त मोह–राग–द्वेष रहित वर्तता हुआ पूर्वोपार्जित कर्मरज को खिरा देता है।

कवि हीरानन्द इसी भाव को काव्य द्वारा स्पष्ट करते हैं –

(दोहा)

जो संवर संयुक्त है, आपा साधै आप।
ग्यान रूप कै ध्यान तैं, करै न करम मिलाप।।१४०।।

(सवैया इकतीसा)

संवर संयुक्त होइ वस्तुरूप आपा जोई,
पर कै मिलाप सेती आपा न्यारा करई।
अपने प्रयोजन में लगै आप जानि करि,
आप तैं अभिन्न ग्यान आपरूप धरई।।
राग–दोष चिकनाई आपतैं जुदाई जानि,
तातैं रूखै अंग सब कर्म धूलि झरई।
यातैं धर्म शुक्ल ध्यान निर्जरा कौ हेतु है,
ज्ञानी को परम्परा मोक्ष फल देतु है।।१४१।।

कवि कहते हैं कि ''संवर पूर्व के अन्तरंग–बहिरंग तपों द्वारा ज्ञानी जीव कर्मों की निर्जरा करते हैं। निर्जरा का मुख्य हेतु धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान है जो कि ज्ञानी की परम्परा मोक्ष का कारण बनता है।''

इसी गाथा पर व्याख्यान देते हुए गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि – यह निर्जरा तत्त्व की बात है। जिसने सर्वप्रथम सच्चे देव–गुरु की श्रद्धा की तथा बाद में उनसे भी राग छोड़कर आत्मा की श्रद्धा, अनुभूति तथा लीनता की, उसे निर्जरा होती है। इच्छा का निरोध तप है, किन्तु वह इच्छा निरोध विकार रहित शुद्ध चैतन्य स्वभाव के आश्रय से होता है। उस शुद्ध आत्मा के आश्रय से जो शुद्ध उपयोग होता है, वह भावनिर्जरा है तथा चिदानन्द शान्त स्वरूप आत्मा के आश्रय से शान्ति प्रगट होने पर जो पुराने कर्म खिर जाते हैं वह कर्मों का खिर जाना द्रव्य निर्जरा है।''[१]

इसप्रकार इस गाथा में मुख्य बात यह कही कि – निर्जरा का मख्य हेतु संवरपूर्वक ध्यान करना है। ●

गाथा – १४६

विगत गाथा में द्रव्य एवं भाव निर्जरा के मुख्य कारण बताये हैं?

अब प्रस्तुत गाथा में ध्यान के स्वरूप का कथन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व जोगपरिकम्मो।
तस्स सुहासुहडहणो झाणमओ जायदे अगणी।।१४६।।

(हरिगीत)

नहिं राग–द्वेष–विमोह अरु नहिं योग सेवन है जिसे।
प्रगटी शुभाशुभ दहन को, निज ध्यानमय अग्नि उसे।।१४६।।

जिसे मोह और राग–द्वेष नहीं हैं तथा योगों का सेवन नहीं है अर्थात् मन–वचन–काय के प्रति उपेक्षा है, उसे शुभाशुभ को जलानेवाली ध्यानमय अग्नि प्रगट होती है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र देव टीका में सविस्तार कहते हैं कि ''शुद्धस्वरूप में अविचलित चैतन्य परिणति ही यथार्थ ध्यान है। ध्यान प्रगट होने की विधि यह है कि जब ध्यानकर्ता दर्शनमोहनीय और चारित्र मोहनीय का विपाक होने से उस विपाक को अपने से भिन्न अचेतन कर्मों में समेट कर, तदनुसार परिणति से उपयोग को व्यावृत्त करके अर्थात् उस विपाक के अनुरूप परिणमन में से उपयोग को निवर्तन करके मोही, रागी और द्वेषी न होनेवाले उपयोग को शुद्ध आत्मा में ही निष्कम्परूप से लीन करता है, तब उस योगी को – जो कि अपने निष्क्रिय चैतन्य स्वरूप में विश्रान्त है, मन–वचन–काय को नहीं ध्याता, मन–वचन–काय का अनुभव नहीं करता और स्वकर्मों में व्यापार नहीं करता उसे सकल शुभाशुभ कर्म रूप ईंधन को जलाने में समर्थ अग्निसमान परम पुरुषार्थ रूप ध्यान प्रगट होता है। अतः अन्य की तो बात ही क्या करें, यहाँ तो कहते हैं कि शास्त्रों में भी अधिक नहीं उलझना चाहिए।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी अपनी काव्यभाषा में कहते हैं –

(दोहा)

राग–दोष नहिं मोह फुनि, जोग नहिं अस जास।
ध्यान–अगनि करि तासकै, करम सुभासुभ नास।।१४३।।

(सवैया इकतीसा)

जाही समै जोगी–जीव दर्सन–ज्ञान–चारित्र,
कर्म कै विपाक सबै न्यारा रूप करता।
राग–दोष–मोह तीनौं इनकौ अभाव कीनौ,
सुद्ध ग्यान रूप आपा आप माहिं परता।।
ताही समै काय–वाचा–मन सौं निराला आप,
चेतना अचल रूप कर्म नाहिं वरता।
तातैं पुरुषार्थ–सिद्ध–साधक है ध्यान–वह्नि,
पुरा कर्म दाहि दाहि सुद्ध रूप धरता।।१४४।।

(दोहा)

सुद्ध–सरूप विषै अचल चेतनता सो ध्यान।
यातैं आतम–लाभ का कारण रूप निदान।।१४५।।

कवि हीरानन्दजी उक्त काव्यों में कहते हैं कि जिनके राग–द्वेष व मोह नहीं है तथा योगों का सेवन नहीं हैं अर्थात् मन–वचन–काय के प्रति उपेक्षा है, उनके शुभाशुभ को जलाने वाली ध्यानमय अग्नि प्रगट होती है। उससे वे जीवों के राग–द्वेष–मोह – तीनों का अभाव करके तथा भेदज्ञान द्वारा दर्शन ज्ञान चारित्र को प्राप्त कर मन–वचन–काय से भिन्न करके ध्यानरूपी अग्नि से पुराने कर्मों को नष्ट करते हैं, उनके कर्मों की निर्जरा होती है।

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''जिन जीवों के राग–द्वेष–मोह नहीं है तथा तीन योगों का परिणमन नहीं है, उन जीवों को शुभाशुभ भावों का नाश करने वाली ध्यान स्वरूप अग्नि प्रगट हो जाती है। जो जीव अपने ज्ञान स्वरूप में एकाग्र होकर राग–द्वेष उत्पन्न नहीं करते, उनके शुभाशुभ भावों का नाश हो जाता है।

तात्पर्य यह है कि जो जीव परमात्म स्वरूप में अडोल हैं, वे जीव ध्यान करने वाले हैं। जिनका उपयोग शुभाशुभ भाव में नहीं जाता, परमात्मा स्वभाव में स्थिर हो गया है, उसे धर्म होता है।

जब स्वरूप में एकाग्रता करने वाले संत–मुनि अनादिकालीन मिथ्या वासना का अभाव करके अपने स्वरूप में आते हैं, तब उन्हें ध्यान होता है। सम्यग्दर्शन होते ही निर्जरा प्रारंभ हो जाती है। मुनियों को विशेष निर्जरा होती है।

इस प्रकार जो जीव आत्मा का श्रद्धानज्ञान करके मोह–राग–द्वेष रहित शुद्ध स्वरूप में निष्कम्प रूप से स्थिरता करते हैं, उन भेद विज्ञानी ध्यानी को स्वरूप साधक पुरुषार्थ का परम उपाय रूप ध्यान उत्पन्न होता है। ऐसे ध्यान से निर्जरा होती है। ●

धन्यवाद !

1. चि. सौम्य एवं सौ. ईशा तथा चि. श्रेय एवं सौ. महक के विवाहोपलक्ष्य में श्री आनन्दकुमारजी अजमेरा परिवार रतलाम की ओर से जैनपथप्रदर्शक हेतु1100/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

2. सिवनी (म.प्र.) निवासी श्रीमती कुसुमलता भारिल्ल धर्मपत्नी डॉ. के.सी. भारिल्ल को चार साल की अस्वस्थता के पश्चात् स्वास्थ्य लाभ हुआ है। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 250 एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 500/– रुपये प्राप्त हुये।

सिंगापुर, अमेरिका, कनाडा और इंग्लैण्ड में डॉ. भारिल्ल –

विदेशों में बही धर्म की गंगा

1. श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** देशभर में तत्त्वप्रचार करने के साथ–साथ विदेश में भी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रचार का कार्य विगत 30 वर्षों से कर रहे हैं। इसी क्रम में इस वर्ष भी उन्होंने सिंगापुर, अमेरिका, कनाडा और इंग्लैण्ड के अनेक नगरों में दिनांक 8 जून से 20 जुलाई 2012 तक 41 दिनों तक अनवरत धर्मप्रचारार्थ प्रवास किया। इसी क्रम में उनके सिंगापुर में क्रमबद्धपर्याय पर, लॉस एजिल्स में धर्म के दशलक्षण पर, सान फ्रांसिसको में छहढाला पर, टोरंटो (कनाडा) में प्रवचनसार की गाथा 94 पर, शिकागो में आत्मानुभूति पर, डलास में पंचकल्याणक पर, लंदन में समयसार बंधाधिकार के गंभीर विषयों पर तात्विक प्रवचन हुये।

2. इस वर्ष **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** टोरंटो (कनाडा) गये, जहाँ उनके मोक्षमार्गप्रकाशक के व्यवहाराभासी प्रकरण पर प्रवचन हुये।

3. इस वर्ष **पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** भी दिनांक 22 जून से 19 जुलाई तक **अमेरिका एवं कनाडा** में तत्त्वप्रचार हेतु गये। इस क्रम में उनके अमेरिका के **शिकागो** में 6 दिन प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् पूजन का स्वरूप एवं प्रयोजन पर तथा दोपहर व सायंकाल आत्मानुभूति एवं सम्यग्दर्शन विषय पर प्रवचन हुये। **पिट्सबर्ग** में 6 दिनों तक 15 घण्टे प्रवचनों में अष्ट कर्मों के आस्रव के कारण, विविध पूजनों का अर्थ एवं प्रयोजन पर तथा **डलास** में 8 दिनों तक प्रतिदिन प्रवचनसार पर प्रवचन हुये। आप **टोरंटो (कनाडा)** भी गये, जहाँ जाना (जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका) द्वारा आयोजित शिविर में आपके निश्चय–व्यवहार एवं तीन लोक विषय पर व्याख्यान हुये।

डलास (अमेरिका) में वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न

यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में नवनिर्मित वेदी पर भगवान आदिनाथ, भगवान शांतिनाथ एवं भगवान महावीरस्वामी की वीतराग भाववाही श्वेत पाषाण प्रतिमायें विराजमान करने हेतु दिनांक 13 से 15 जुलाई 2012 तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। जिनमंदिर में पंचपरमागम एवं षट्खण्डागम ग्रन्थ भी विराजमान किये गये। साथ ही प्रतिमाओं पर छत्र एवं वेदी शिखर पर ध्वज एवं कलश स्थापित किये गये। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के प्रासंगिक प्रवचनों एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिष्ठा विधि के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने सम्पन्न कराये। समस्त कार्य श्री अतुलभाई खारा के निर्देशन में श्रीमती चारुबेन, श्रीमती पुष्पा वैद एवं अनेक युवा कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से सम्पन्न हुये। रात्रि में अखिलभाई एवं युवा साथियों द्वारा ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। सम्पूर्ण आयोजन में लगभग 500–600 साधर्मियों ने भरपूर धर्मलाभ लिया। **– अनंत जैन, डलास**

तिथि दर्पण – 2013

तिथि दर्पण – 2013

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

98 तीसरा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

नियमसार के अनुसार जिनसूत्र के जानकार पुरुषों के साथ-साथ जिनसूत्र (शास्त्र) भी देशनालब्धि में निमित्त होते हैं।

उक्त संदर्भ में नियमसार का निम्नांकित कथन दृष्टव्य है –

''सम्मत्तस्स णिमित्तं जिणसुत्तं तस्स जाणया पुरिसा।
अंतरहेऊ भणिदा दंसणमोहस्स खयपहुदी।।५३।।

(हरिगीत)

जिन सूत्र समकित हेतु पर जो सूत्र के ज्ञायक पुरुष।
वे अंतरंग निमित्त हैं दृग मोह क्षय के हेतु से।।५३।।

सम्यक्त्व का निमित्त जिनसूत्र हैं और जिनसूत्र के ज्ञायक पुरुष सम्यग्दर्शन के अंतरंग हेतु कहे गये हैं; क्योंकि उनके दर्शनमोह के क्षयादिक होते हैं।''

इस गाथा की टीका करते हुए मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव जो लिखते हैं, उसका भाव इसप्रकार है –

''इस सम्यक्त्व परिणाम का बाह्य सहकारीकारण वीतराग-सर्वज्ञ के मुख कमल से निकला हुआ, समस्त वस्तुओं के प्रतिपादन में समर्थ द्रव्यश्रुतरूप तत्त्वज्ञान ही है और जो ज्ञानी धर्मात्मा मुमुक्षु हैं; उन्हें भी उपचार से पदार्थनिर्णय में हेतुपने के कारण अंतरंग हेतु (निमित्त) कहा है; क्योंकि उन्हें दर्शनमोहनीय कर्म के क्षयादिक हैं।''

इस गाथा और इसकी टीका के भाव को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''जो जीव निश्चयसम्यग्दर्शन प्रकट करता है, उसको कौन निमित्त होता है – इसकी पहचान इस गाथा में कराई है। **सम्यग्दर्शन में निमित्त भगवान की वाणी अथवा वाणी से रचित जिनसूत्र हैं।**[१]

जिनसूत्र के जाननेवाले पुरुष अन्तरंग निमित्त हैं। जिनसूत्र के मात्र शब्द निमित्त नहीं होते, अपितु जिनसूत्र के रहस्य को जानकर तदनुसार अन्तरंग परिणमन को प्राप्त ज्ञानी पुरुष, जिन्होंने स्वयं में सम्यग्दर्शन उपलब्ध कर लिया है; यद्यपि वे भी दूसरे के लिए सम्यग्दर्शन में अन्तरंग नहीं; तथापि वाणी और ज्ञानी पुरुष – इन दोनों निमित्तों में भेद-प्रदर्शन के लिए वाणी को बाह्य और ज्ञानी को अन्तरंग निमित्त कहा है।

यद्यपि ज्ञानी पुरुष पर हैं, फिर भी वे क्या कहना चाहते हैं; उस आत्मिक अभिप्राय को उनके समक्ष उपस्थित धर्म प्राप्त करनेवाला जीव जब पकड़ लेता है और अभिप्राय को पकड़ से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति हो जाती है, तब उस ज्ञानी पुरुष को जिससे उपदेश मिला है, अन्तरंग हेतु अथवा निमित्त कहा जाता है।[२]''

१. नियमसार प्रवचन, पृष्ठ ४८० २. वही, पृष्ठ ४८०-४८१

विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ सम्यग्दर्शन के बाह्य सहकारी कारण (निमित्त) के रूप में वीतराग-सर्वज्ञ के मुखकमल से निकला हुआ, समस्त वस्तुओं के प्रतिपादन में समर्थ द्रव्यश्रुतरूप तत्त्वज्ञान को स्वीकार किया गया है और दर्शनमोहनीय के क्षयादिक के कारण ज्ञानी धर्मात्माओं को पदार्थ निर्णय में हेतुपने के कारण अंतरंगहेतु (निमित्त) उपचार से कहा गया है।

यद्यपि अन्य शास्त्रों में दर्शनमोहनीय के क्षयादिक को सम्यग्दर्शन का अंतरंग हेतु (निमित्त) और देव-शास्त्र-गुरु व उनके उपदेश को बहिरंग हेतु (निमित्त) के रूप में स्वीकार किया गया है; तथापि यहाँ ज्ञानी धर्मात्माओं को अंतरंग हेतु बताया जा रहा है।

प्रश्न – दर्शनमोहनीय के क्षयादिक का उल्लेख तो यहाँ भी है।

उत्तर – हाँ; है तो, पर यहाँ पर तो जिसका उपदेश निमित्त है, उस ज्ञानी के दर्शनमोहनीय के क्षयादिक की बात है और अन्य शास्त्रों में जिसे सम्यग्दर्शन हुआ है या होना है, उसके दर्शनमोह के क्षयादिक की बात है।

एक बात और भी ध्यान देने योग्य है कि यहाँ ज्ञानी धर्मात्माओं को उपचार से अंतरंग हेतु (निमित्त) कहा है। यद्यपि **उपचार** शब्द के प्रयोग से बात स्वयं कमजोर पड़ जाती है; तथापि जिनगुरु और जिनागम की निमित्तता के अंतर को स्पष्ट करने के लिए ज्ञानी धर्मात्माओं को अंतरंग निमित्त कहा गया है।

जिनवाणी और ज्ञानी धर्मात्माओं में यह अंतर है कि जिनवाणी को तो मात्र पढ़ा ही जा सकता है; पर ज्ञानी धर्मात्माओं से पूछा भी जा सकता है, उनसे चर्चा भी की जा सकती है। जिनवाणी में तो जो भी लिखा है, हमें उससे ही संतोष करना होगा; पर वक्ता तो हमारी पात्रता के अनुसार हमें समझाता है। वह अकेली वाणी से ही सब कुछ नहीं कहता, अपने हाव-भावों से भी बहुत कुछ स्पष्ट करता है। यही अंतर स्पष्ट करने के लिए यहाँ उक्त अन्तर रखा गया है।

यद्यपि देव-शास्त्र-गुरु की सच्ची श्रद्धा तो सम्यग्दृष्टि धर्मात्माओं को ही होती है; क्योंकि देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन के स्वरूप में शामिल किया गया है; तथापि **सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के पहले भी देव-गुरु और उनकी वाणी पर कुछ न कुछ विश्वास-श्रद्धान तो होता ही है, अन्यथा उनकी बात को ध्यान से सुनेगा कौन ? विश्वास बिना आत्मा के स्वरूप के प्रतिपादक शास्त्रों का स्वाध्याय करेगा कौन?**

उक्त श्रद्धा के स्वरूप को हम निम्नांकित उदाहरण से समझ सकतेहैं–

हम रेल से यात्रा कर रहे थे कि अचानक हमारे पेट में भयंकर दर्द हुआ। हम दर्द से तड़फ रहे थे। दवा के रूप में हमारे पास जो कुछ उपलब्ध था, हमने उसका उपयोग किया; पर कोई आराम नहीं हुआ।

हमें तड़फता हुआ देखकर सामने बैठे व्यक्ति ने कहा –

''मेरे पास एक दवा है, जिसकी एक खुराक लेने पर पेट का दर्द एकदम ठीक हो जाता है; आप चाहे तो मैं आपको दे सकता हूँ।''

''क्या बात करते हो, हमने तो बड़े-बड़े डॉक्टरों को दिखाया है, उनकी दवा महीनों ली है; पर इससे छुटकारा नहीं मिला। आपकी इस छोटी-सी पुड़िया से क्या होनेवाला है ?''

मेरी यह बात सुनकर वे बोले – ''खाकर तो देखिये।''

पर हमने कोई ध्यान नहीं दिया और दर्द से तड़फते रहे, चीखते-चिल्लाते रहे।

उन्हें अगले ही स्टेशन पर उतरना था, सो वे उतर कर चले गये; पर उस पुड़िया को हमारे पास रखते हुए कह गये कि आप उचित समझे तो इसे ले लेना।

जब हमारी वेदना असह्य हो गई तो यह सोचकर कि खाकर तो देखे, हमने उस दवा को खा लिया।

उस दवा ने जादू जैसा असर किया और हमारा दर्द गायब हो गया।

अब हमें विश्वास हुआ, पर हमने न तो उस दवा का नाम पूछा था और न उनका पता।

अत: उनकी खोज में समाचार-पत्रों में विज्ञापन दिया, दूरदर्शन और आकाशवाणी से सूचनायें निकालीं; पर उनका कोई पता नहीं चला।

जो भी हो, हम तो यह कहना चाहते हैं कि हमें उस दवा को खाने के पहले उस पर विश्वास था या नहीं ? पूरा विश्वास होता तो उसके सामने ही खा लेते; बिल्कुल भी विश्वास न होता तो बाद में भी नहीं खाते।

अत: विश्वास और अविश्वास के बीच कुछ था, पर हम उसे विश्वास ही कहते हैं; क्योंकि विश्वास बिना खाना ही संभव न था; पर जैसा अटूट विश्वास दवा खाने के बाद आराम मिलने पर हुआ, वैसा विश्वास पहले नहीं था।

इसीप्रकार अनुभव हो जाने के बाद के विश्वास और उसके पहले के विश्वास में अन्तर तो है ही। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के वीडियो प्रवचन उपलब्ध

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्ताकर्माधिकार के 18 डीवीडी में 108 प्रवचन, पुण्य-पाप अधिकार व संवर अधिकार के 5 डीवीडी में 47 प्रवचन एवं आस्रव अधिकार के 2 डीवीडी में 18 प्रवचन उपलब्ध हैं। **प्राप्ति हेतु संपर्क :** ए-4, बापूनगर, जयपुर फोन : 0141-2705581, 2707458

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

12 से 19 सितम्बर 2012	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
19 से 28 सितम्बर 2012	नागपुर	दशलक्षण महापर्व
21 से 30 अक्टूबर 2012	जयपुर	शिक्षण शिविर
3 नवम्बर 2012	अलीगढ	दीक्षान्त समारोह
10 से 14 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
24 से 29 नवम्बर	सम्मेदशिखर	पंचकल्याणक
25 से 30 दिसम्बर	भीलवाड़ा	पंचकल्याणक

सलाहकार समिति का अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 29 जुलाई को श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार समिति का अधिवेशन रखा गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुमनभाई दोशी राजकोट ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, श्री हर्षवर्धनजी औरंगाबाद, श्री सुभाषचंद वकीलचंदजी नांगलोई दिल्ली, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली उपस्थित थे।

अधिवेशन के उद्घाटनकर्त्ता श्री रमेशभाई दोशी थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु.परिणति पाटील जयपुर ने किया एवं संचालन करते हुये ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय दिया।

इस अवसर पर विद्वानों के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में तीर्थराज सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक में आने का आमंत्रण देते हुये कहा कि यह सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज का आयोजन है, इसे सफल बनाने की जिम्मेवारी हम सबकी है।

ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई ने सम्मेदशिखर, गिरनारजी आदि सिद्धक्षेत्रों के बारे में कानूनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। पंचकल्याणक की आवास व्यवस्था की जानकारी श्री विजयजी बड़जात्या व श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर ने एवं भोजन सम्बन्धी जानकारी श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर ने दी।

इस अवसर पर पण्डित शिखरचंदजी विदिशा ने कहा कि भविष्य में इन बालकों को ही तत्त्वप्रचार का झण्डा पकड़ना है; अत: इनमें जैन सिद्धांतों का बीजारोपण अत्यंत आवश्यक है। इसके लिये प्रत्येक गांव में जैन स्कूल खोले जाने चाहिये। इनके अतिरिक्त पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अन्त में तीर्थक्षेत्रों एवं सत्साहित्य की सुरक्षा के बारे में विभिन्न वक्ताओं ने सुझाव दिये, जिनके बारे में श्री बसन्तभाई दोशी ने विस्तृत चर्चा करते हुये समाधान प्रस्तुत किया।

चलो सम्मेदशिखर ! **चलो सम्मेदशिखर !!**

दिनांक 24 से 29 नवम्बर 2012

तीर्थराज सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक में पधारने हेतु सभी साधर्मियों को हार्दिक आमंत्रण है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित रमेशजी शास्त्री 'दाऊ', पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित दीपकजी वैद्य जयपुर, ब्र. जतीशभाई दिल्ली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त 6.30 बजे से 7.00 बजे तक जी-जागरण पर आने वाले समयसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला।

35वें शिक्षण शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती कनकबेन अनंतराय सेठ परिवार विले पार्लेमुम्बई, स्व. श्री गुलाबचंदजी कासलीवाल मुम्बई की स्मृति में शुभहस्ते कासलीवाल परिवार मुम्बई, श्रीमती सुनीता शांतिनाथ जैन पूना की स्मृति में शुभहस्ते शांतिनाथ व अजितकुमारजी जैन पूना-बड़ौदा, श्री प्रेमचंद सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज कोटा एवं श्री नवीनचंद केशवलालजी मेहता मुम्बई रहे।

इस अवसर पर श्री 20 तीर्थंकर निर्वाण विधान का आयोजन किया गया, जिसके आयोजनकर्ता पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री गुलाबचंदजी जैन बीना, श्री केशव सुधांशुजी जैन करावली, श्री रमण मोतीचंदजी दोशी तलोद, श्री नरेन्द्रकुमारजी बड़जात्या जयपुर एवं श्री भभूतमलजी भंडारी बैंगलोर थे।

शिविर के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार के आस्रव अधिकार, पुण्य-पाप अधिकार एवं संवर अधिकार पर हुये वीडियो प्रवचनों की डी.वी.डी. तथा जयपुर पंचकल्याणक की 20 डी.वी.डी. का विमोचन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशचंदजी इन्दौर एवं कमलचंदजी गुना ने संपन्न कराये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, श्री अशोकजी जबलपुर एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के निर्देशन में संपन्न हुये।

शाकाहार दिवस मनायें

पशुओं के अधिकारों के लिये कार्य कर रही संस्था पीपल फॉर एनिमल लिबरेशन (पाल) द्वारा 9 अगस्त को देशभर में शाकाहार दिवस मनाया जायेगा। इस दिन पाल के सदस्य शाकाहार समर्थकों के साथ मिलकर लोगों को मांस मुक्त आहार अपनाने के लिए अपील करेंगे। यदि आप अपने नगर/गांव में इसका आयोजन करते हैं तो आपको शाकाहार सम्बन्धी साहित्य नि:शुल्क उपलब्ध कराया जायेगा।

संपर्क सूत्र -E-mail : info@palindia.org
Mob : 8094082001

जयपुर शिविर का हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा 15वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) अवश्य लिखें। संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल एड्रेस हो तो वह भी भेजें। **-मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

पत्राचार का पता - दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स-2704127
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127